राधाचरितम् एवं प्रियप्रवास का तुलनात्मक अध्ययन

संस्कृत विषय में पी.–एच.डी. की उपाधि हेतु

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध की

प्रस्तावित रूपरेखा

2018

निर्देशिका

डॉ. निशीथ गौड़
अिस. प्रोफेसर
संस्कृत विभाग, कला संकाय
डी.ई.आई.,दयालबाग, आगरा।

शोधार्थिनी

नीलम प्रसाद
एम. ए. (संस्कृत,इतिहास)
बी. एड.

अध्ययन क्षेत्र – संस्कृत साहित्य

विभागाध्यक्षा

प्रो.अगम कुलश्रेष्ठ

संस्कृत विभाग, कला संकाय

संकाय प्रमुख

प्रो- जे. के. वर्मा

कला संकाय

दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी), दयालबाग आगरा –**282005**

राधाचरितम् एवं प्रियप्रवास का तुलनात्मक अध्ययन

परिचय

महाकाव्य के विकसित स्वरूप को देखते हुए उसे किसी एक निश्चित परिभाषा में बांधना आसान नहीं है इसी कारण विभिन्न युगों के काव्यकारों ने महाकाव्य के अलग –अलग लक्षण दिए हैं । संस्कृत में महाकाव्य लेखन की परंपरा ईसा पूर्व पांच सौ वर्ष प्राचीन है । रामायण और महाभारत महाकाव्य के रूप में स्थापित हो चुके हैं अतः संस्कृत में महाकाव्य लेखन का इतिहास और भी प्राचीन सिद्ध हो जाता है ।

वाल्मीकीय रामायण जिसे "आदिकाव्य" भी कहा गया है, संस्कृत के परवर्ती महाकाव्य लेखन का आदर्श बना और महाभारत ने भी यही भूमिका निभायी ।

परवर्ती काल में भामह और दण्डी प्रभृति आचार्यों ने वाल्मीकीय रामायण आदि के आधार पर महाकाव्य के लक्षणों की कल्पना की और संस्कृत में यह विधा इतनी लोकप्रिय हुई कि अवार्चीन संस्कृत लेखन पर यह विधा अन्य विधाओं की अपेक्षा अधिक प्रभावी रही वस्तुतः कविकुलगुरु कालिदास को संस्कृत महाकाव्य के उत्कर्षकाल का प्रथममहाकाव्यकार माना जा सकता है ।महाकवि कालिदास के बाद संस्कृत के अनेक महाकाव्यकार संज्ञान में आये जिनमे प्रमुख हैं – अश्वघोष ,भारवि, भट्टी, कुमारदास, माघ आदि ।

महाकाव्य में किसी ऐतिहासिक या पौराणिक महापुरुष की सम्पूर्ण जीवन कथा का आद्योपांत वर्णन होता है

महाकाव्य में निम्नलिखित बातें आवश्यक रूप में होनी चाहिए –

1. महाकाव्य का नायक पौराणिक अथवा ऐतिहासिक हो तथा उसका धीरोदात्त होना आवश्यक है

2 नायक के जीवन की सम्पूर्ण कथा का सविस्तार वर्णन होना चाहिए ।

3. श्रृंगार, वीर, शांत रस में से कोई एक रस प्रधान हो और यथा स्थान अन्य रसों का भी प्रयोग होना चाहिए।

4. महाकाव्य नगर, पर्वत, समुद्र, ऋतु, सूर्योदय, चंद्रोदय, उद्यान, जलक्रीडा ,मद्यपान, रति –उत्सव, विवाह, यात्रा, यज्ञ आदि विविध वर्णनों से अलंकृत होना चाहिए।

कम से कम आठ सर्ग या आठ से अधिक सर्ग होने चाहिए प्रत्येक सर्ग के अंत में छन्द परिवर्तित होना चाहिए

सर्गबन्धो महाकाव्यमुच्यते तस्य लक्षणम् ।
आशीर्नमस्क्रियावस्तुनिर्देशो वापि तन्मुखम् ॥

इतिहासकथोद्भूतमितरद्वा सदाश्रयम् ।

चतुर्वर्गफलायत्तं चतुरोदात्तनायकम् ॥

नगरार्णवशैलर्त्तुचन्द्रार्कोदयवर्णनैः ।

उद्यानसलिलक्रीडामधुपानरतोत्सवैः ।

विप्रलम्भैर्विवाहैश्च कुमारोदयवर्णनै ।

मन्त्रदूतप्रयाणाजिनायकाभ्युदयैरपि ॥

अलंकृतमसंक्षिप्तं रसभावनिरन्तरम्

सर्गैरनतिविस्तीर्णैः श्रव्यवृत्तैः सुसन्धिभिः ।

सर्वत्र भिन्नवृत्तान्तैरुपेतं लोकरञ्जकम् ।

काव्यं कल्पान्तरस्थायि जायते सदलङ्कृति ।

दण्डी,काव्यादर्श,1/14–19

महाकाव्य के स्वरूप एवं धारणा का संस्कृत साहित्य मे विस्तार से विवेचन हुआ है हिंदी साहित्य में उसी को आधार बनाकर महाकाव्य सम्बन्धी विशेषताएँ निर्धारित की गई हैं जो निम्नांकित हैं –

1.महाकाव्य सर्गबंध रचना है,ये सर्ग विभिन्न वृत्तांतवाले एवं विस्तृत होते हैं ।

2.इतिहास –प्रसिद्ध अथवा किसी महात्मा, सज्जन व्यक्ति के वास्तविक जीवन पर आश्रित उसका कथानक होता है ।

3.उसमें शक्वरी, अतिशक्वरी, जगती, अतिजगती, त्रिष्टुप् जातिवाले पुष्पिताग्रादि छंदों का प्रयोग होता है ।

4. उसमे नगर, वन, पर्वत, चन्द्र, सूर्य,आश्रम, वृक्ष, उपवन, जल–क्रीडा, मधुपान–उत्सव आदि का वर्णन होता है । समस्त रीतियों,वृत्तियों और रसों का समावेश होता है ।

5.उक्तिवैचित्र्य की प्रधानता होने पर भी उसमें प्राण के रूप में रस ही व्याप्त रहता है ।

काव्यशास्त्र पृष्ठ सं. –44

आधुनिक महाकाव्य

अपने से पूर्ववर्ती साहित्यशास्त्री आचार्यों का अनुकरण करते हुए ''डॉ. रहस्य बिहारी द्विवेदी'' जी ने आधुनिक महाकाव्य के निम्न लक्षण बताए हैं –

सर्गवृत्तैश्च बद्धं सहृदयहृदयाह्लादिशब्दार्थ रम्यं
संवादैश्योच्चशिल्पैः सततरसमयं ग्रंथिर्मुक्तम् समृद्धम् ।
पात्रं स्याद् यस्य मुख्यं परम गुणयुतं लोकविख्यातवृत्तम्
भव्यं लोकस्वभावं महदपि महतां तन्महाकाव्यमास्ते ।।

अर्थात् महाकाव्य सर्गबद्ध होता है । इसका विषय गम्भीर होता है । इसके आरम्भ में आशीर्वाद, नमस्कार, तथा वस्तु निर्देश होता है । इसका नायक महान और धीरोदात्तादि गुणों से युक्त होता है। इसमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष (चतुर्वर्ग) की प्राप्ति तथा सभी रसों का पृथक निरूपणहोना चाहिए। महाकाव्य में नगर पर्वत, सूर्योदय, चंद्रोदय, उद्यान, उत्सव, ऋतु ,क्रीड़ा, विवाह, मन्त्र, दूत प्रयाण आदि का वर्णन भी होना चाहिए।

सर्ग अधिक विस्तृत न हों तथा कथावस्तु पंच नाट्य संधियों से युक्त हो ।

अध्येय महाकाव्य राधाचरितम् एवं प्रियप्रवास –

मेरे अध्ययन का विषय महाकाव्य द्वय हैं राधाचरितम् एवं प्रियप्रवास दोनों ही महाकाव्यों में राधा जी एक प्रमुख पात्र हैं। दोनों ही महाकाव्यों में राधा जी एक समाज सेविका के रूप में दर्शित हैं।

डॉ. हरिनारायण दीक्षित विरचित राधाचरितम् महाकाव्य में राधा जी के उदात्त जीवन का वर्णन है इसकी मुख्य कथा भगवान श्रीकृष्ण जी के ब्रजधाम छोड़कर जाने के पश्चात् वहां की स्थिति का वर्णन तथा राधा जी द्वारा ब्रजवासियों को श्रीकृष्ण की अनुपस्थिति की अनुभूति न होने देना है। प्रथम सर्ग में कृष्ण के वियोग में डूबी राधा जी

सोच रही हैं कि इतने वर्षों के बाद भी कृष्ण ने किसी की भी सुध नहीं ली | कृष्ण के जाने से नन्द बाबा, माता यशोदा, ग्वाल – बाल, गोपियाँ आदि वियोग में डूब गए हैं |

कृष्णस्य चित्तं तु सदा व्रजेऽस्मिन्

गोपेषु गोपीष्ववसच्च गोषु |

जातं परं तन्मथुरां गतस्य

कस्मादकस्मादनुरागशून्यम् ॥ रा.च. – **1 / 3**

द्वितीय सर्ग में व्यष्टिगत भावना को त्याग कर समष्टिगत भावना को स्वीकार करते हुए ब्रजवासियों की सभा करना चाहती हैं |

शिक्षा समुत्सारयते मनस्तमः

शिक्षैव दूरीकुरुते मतिभ्रमान् |

शिक्षा समाजे तनुते मनुष्यतां

करोति शिक्षैव जनांश्च संस्कृतान् ॥ (रा .च .) **2 / 46**

भारत ऐसा देश है जिसकी संस्कृति में त्याग अत्यंत महत्वपूर्ण है |अतः राधाचरितम् महाकाव्यमें राधा जी कृष्ण को यशस्वी बनाने के लिए अपना सर्वस्व त्याग देती हैं |

निजविषमविषादं विस्मरन्तो जना ये

जनपदजनदुःखं हर्त्तुकामा भवन्ति ।

सुभगहृदयचित्तांस्त्यागशीलान् दयालून्

जनजलधिमणींस्तान् श्रद्धयाहं नमामि – रा. च.– **2/66**

तृतीय सर्ग में कर्म योग को कई उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया गया है तथा श्रम की महत्ता बताई गयी है

कर्म्मणा लभ्यते लक्ष्मी:

कर्म्मणा लभ्यते सुखम् ।

कर्म्मणा लभ्यते मानः

कीर्त्तौ कर्म्मैव कारणम् ॥ रा. च . –**3 / 69**

कर्म्मणा लभ्यते धर्म्मः

कर्म्मणार्थोऽपि लभ्यते ।

कर्म्मणा पूर्य्यते कामः

कर्म्म मोक्षेऽपि कारणम् ॥ रा. च. – **3/70**

चतुर्थ सर्ग में राधा जी ब्रजवासियों के लिए बनाई गयी योजनाओं का शुभारम्भ करती हैं पंचम सर्ग में माता यशोदा राधा जी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हैं क्योंकि राधा जी कृष्ण के वियोग में डूबे ब्रजवासियों को कर्मठता, शिक्षा, सम्पन्नता तथा सुख की राह दिखाती हैं तथा कृष्ण जन्मोत्सव का वर्णन किया गया हैं। षष्ठ सर्ग में बसंत ऋतु वर्णन है।

दूरस्थितत्वाद् वसुदेवसूनोः
तस्य स्मृतिस्तामनिशं बबाधे ।
चिराच्च सा कृष्णवियोगविद्धा
चिन्ता – चिता – वह्निवृता तदाभूत् ॥ रा. च. – **6/51**

सप्तम सर्ग में नारद मुनि राधा जी को कृष्ण के सन्देश को बताकर राधा जी का उत्तर पाने की आशा में मौन धारण कर लेते हैं श्री कृष्ण के सन्देश को सुनकर राधा जी विरह की पीड़ा को भूल जाती हैं अष्टम सर्ग में नारद मुनि द्वारा सम्पूर्ण ब्रजमण्डल के दर्शन का वर्णन है नवम सर्ग में सूर्यग्रहण का वर्णन है दशम सर्ग में श्रीकृष्ण के दर्शनों से ब्रजवासी धन्य हो जाते हैं।

अकारि रामाय न सीतया पुरा

कृतं शिवान्या नच शङ्कराय यत् ।

नाकारि कस्मै च कयाचिदन्यया

मह्यं त्वयाकारि यशस्करं हि तत् ॥ रा.च. – 10/63

देवि! क्वचिच्चेन्महिला भवादृशी

भवेद्धि तत्र प्रभवन्ति नापदः ।

श्रियां वसन्त्यां न यथा दरिद्रता

न देवनद्यामपवित्रता यथा ॥ रा.च.– 10/114

एकादश सर्ग में सुख दुःख का वर्णन आया है द्वादश सर्ग में ब्रज की शोभा बताई गयी है त्रयोदश सर्ग में प्रकृति के संरक्षण का वर्णन है चतुर्दश सर्ग में श्रीकृष्ण के शिरोवेदना को दूर करने के लिए राधा जी अपनी चरण धूलि प्रदान करती हैं पंचदश सर्ग में श्रीकृष्ण पवन को दूत बनाकर राधा जी के पास अपना सन्देश भेजते हैं। षोडश सर्ग में श्रीकृष्ण का सन्देश पाकर राधा जी तीर्थ यात्रा के लिए द्वारिकापुरी जाती हैं सप्तदश सर्ग में भगवान अपनी पत्नियों से राधा जी का परिचय करते हैं नवदश सर्ग में शारीरिक

अवस्थाओं का वर्णन है एकविंशत सर्ग में ब्रजवासी तीर्थ यात्रा से लौटी हुई राधा जी को देखकर प्रसन्न हो रहे हैं द्वाविंशति सर्ग में राधा जी श्रीकृष्ण के साथ गोलोक गमन की इच्छा व्यक्त करती हैं।

इस प्रकार सम्पूर्ण महाकाव्य का अध्ययन कर हम कह सकते हैं कि राधाचरितम् महाकाव्य महाकाव्य के लक्षणों को ध्यान में रखकर लिखी गयी सर्वश्रेष्ठ रचना है।

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' विरचित प्रियप्रवास विरह काव्य है प्रियप्रवास में 17 सर्ग हैं। कथा का मूलाधार श्रीमद्भागवत का दशम स्कन्ध है, जिसमें श्रीकृष्ण जन्म, यौवन, कृष्ण का ब्रज से मथुरा प्रवास और लौटकर आने का वर्णन किया गया है। महाकाव्य की सम्पूर्ण कथा दो भागों में विभाजित है पहले से आठवें सर्ग तक की कथा में कंस का निमंत्रण लेकर अक्रूर जी ब्रज आते हैं। श्रीकृष्ण ब्रजवासियों को छोड़कर मथुरा चले जाते हैं। जिससे समस्त ब्रजवासी शोक में डूब जाते हैं। नौवें सर्ग से लेकर सत्रहवें सर्ग तक की कथा में श्रीकृष्ण अपने मित्र उद्धव को ब्रजवासियों को सांत्वना देने के लिए मथुरा भेजते हैं। प्रियप्रवास में कवि ने कृष्ण को महापुरुष की भांति अंकित किया है। कृष्ण के चरित की तरह प्रियप्रवास के राधा के चरित्र में भी नवीनता है उसमे विरह की विकलता

नहीं व्यथा की गंभीरता है उसने कृष्ण के कर्मयोग को ह्रदयंगम कर लिया है। कृष्ण के प्रति उनका प्रेम विश्वात्म और उसकी वेदना लोक सेवा बन गयी है।

प्यारे जीवें जग –हित करें गेह चाहे न आवें। – प्रियप्रवास, 16/98

पायी जाती विविध जितनी वस्तुये है सबों में।

जो प्यारे को अमित रंग औ रूप में देखती हूँ।

तो मै कैसे न उन सबको प्यार जी से करुँगी।

यों है मेरे ह्रदय – तल में विश्व का प्रेम जागा। – प्रियप्रवास, 16/105

प्रियप्रवास में कृष्ण पारिवारिक और सामाजिक स्वजन के रूप में दर्शित हैं और जैसा कि महाकाव्य के नाम से ही स्पष्ट है, मुख्य प्रसंग है "प्रियप्रवास" परिवार और समाज के प्रिय कृष्ण का वियोग। इस महाकाव्य में वर्णन बाहुल्य और वाक्वैदग्ध का आधिक्य है।महाकाव्य में संवेदना का चित्रण भली – भांति किया गया है।

संलग्नता हो विविध कितने सांत्वना – कार्य्य में भी

वे सेवा थीं सतत करती वृद्ध – रोगी जनों की।

दीनों – हीनों निबल विधवा आदि को मानती थीं।

पूजी जाती ब्रज – अवनि में देवितुल्या अतः थीं ॥ **17/46**

द्विवेदी युग में देश प्रेम ,स्वाधीनता ,विश्व – बंधुत्व ,मानवतावाद और सुधारवाद की जो लहर चली उसका स्वर प्रियप्रवास में सुनाई पड़ता है ।

सच्चे –स्नेही अवनिजन के देश के श्याम जैसे।

राधा जैसी सदय – ह्रदया विश्व के प्रेम में डूबी।

हे विश्वात्मा – भरत –भुवि के अंक में और आवें।

देश व्यापी विरह घटना किन्तु कोई न होवें। –प्रियप्रवास,**17/5**4

कवि ने कृष्ण के साथ–साथ राधा को भी विश्व प्रेम में लीन दिखाने की चेष्टा की है

उद्देश्य

1.अंतः विषय पर आधारित शोध कार्य है। अंत: विषय से मेरा तात्पर्य है (Interdisciplinary) अंतर्विद्यावर्ती शोध कार्य है।

2 - आधुनिक संस्कृत महाकाव्य और आधुनिक हिंदी महाकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया जायेगा जो की एक नवीन कार्य होगा।

3- प्राचीन राधा और आधुनिक राधा के साम्य और वैषम्य का अध्ययन किया जायेगा।

4- जनमानस को श्रीकृष्ण के मथुरा चले जाने के बाद की कथा से अवगत कराना।

सम्बंधित साहित्य का अध्ययन –

1.राधाचरित, दि, एंड इट्स माहात्म्य एज डिपिक्टेड इन दि पुराणिक लिटरेचर 3/4देवश्रयी, उमाबेन, आई *** गुजरात, 1988 पी.एच.डी.

2.राधाचरित – महाकाव्यम्, श्री,ए क्रिटिकल स्टडी ऑन बाय पं कालिका प्रसाद शुक्ल ¾ मिश्र, अभय कुमार***कुरुक्षेत्र (इन प्रोग्रेस)

a- डॉ. शंकर लाल मेहरोत्रा के निर्देशन में श्रीमति शांति सेठ द्वारा प्रियप्रवास की भाषा का भाषाशास्त्रीय अध्ययन विषय पर शोध कार्य किया गया। डॉ.भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा।

परन्तु राधाचरितम् एवं प्रियप्रवास का तुलनात्मक अध्ययन विषय पर कोई कार्य मेरे संज्ञान में नहीं आया है अतः मैंने उपर्युक्त विषय को ही अपने शोध का विषय बनाया।

शोध दृष्टि

1. शोध में महाकाव्य के स्वरूप का निर्धारण करते हुए महाकाव्य स्वरूप एवं परंपरा का निरूपण करना।

2.महाकाव्यों का व्यावहारिक दृष्टि से विवेचन करना एवं तुलनात्मक अध्ययन करना।

3.अध्येय महाकाव्यों में राधा जी को प्रमुख पात्र के रूप में चित्रित करना।

4.राधा जी को एक नारी के रूप में ,समाज सेविका के रूप में ,सखी के रूप में तथा प्रेमिका के रूप में अध्ययन करना।

5. शोध कार्य की उपादेयता को प्रस्तुत करना।

6.शोध कार्य के लिए सहायक ग्रन्थ सूची का विवरण देना।

शोध प्रविधि

शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रविधियों का प्रयोग किया जायेगा।

राधाचरितम् एवं प्रियप्रवास का तुलनात्मक अध्ययन

प्रथम अध्याय– महाकाव्य स्वरूप एवं परम्परा

1. महाकाव्य का लक्षण – प्राचीन एवं आधुनिक
2. अध्येय महाकाव्यों तथा महाकाव्यकारों का परिचय

अध्येय महाकाव्य –

1. राधाचरितम्
2. प्रियप्रवास

अध्येय महाकाव्यकार –

1. डॉ. हरिनारायण दीक्षित
2. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
3. महाकाव्य के लक्षणों के आधार पर महाकाव्यत्व सिद्ध करना

द्वितीय अध्याय – संस्कृत एवं हिन्दी वांग्मय में राधा

क. संस्कृत वांग्मय में राधा

1. श्रीराधोपनिषद् में राधा
2. पुराणों में राधा

3. आधुनिक काव्यों में राधा

ख. हिन्दी वांग्मय में राधा

1. आदिकाल में राधा

2. भक्तिकाल में राधा

3. रीतिकाल में राधा

4. आधुनिककाल में राधा

तृतीय अध्याय – अध्येय महाकाव्यों में वर्णित राधा एक तुलनात्मक अध्ययन

क. राधाचरितम् में राधा

ख. प्रियप्रवास में राधा

ग. तुलनात्मक अध्ययन

1. समाज सेविका के रूप में

2. सखी के रूप में

3. प्रेमिका के रूप में

4. नारी इत्यादि के रूप में

चतुर्थ अध्याय – अध्येय महाकाव्यों का सांस्कृतिक अध्ययन

1. सामाजिक

2. राजनीतिक

3. धार्मिक

4. आर्थिक

पंचम अध्याय – अध्येय महाकाव्यों में काव्यगत सौंदर्य

1. भावगत सौंदर्य

क. रस योजना

ख. भावाभिव्यक्ति

2. कलागत सौंदर्य

क. भाषा शैली

ख. अलंकार

ग. छन्द

उपसंहार **–निष्कर्ष एव प्रासंगिकता**

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

मूल ग्रन्थ

1. राधाचरितम् डॉ. हरिनारायण दीक्षित (2005)

   ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली

2. प्रियप्रवास डॉ. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

   (1914) – खड्गविलास प्रेस पटना

सहायक ग्रन्थ

1. महाकविदण्ड्याचार्यविरचितः काव्यादर्शः 'प्रकाश' संस्कृत– हिन्दी व्याख्याद्वयोपेतः आचार्यः श्रीरामचन्द्रमिश्रः, (1972), चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
2. काव्यप्रकाशः [श्रीमम्मटाचार्यविरचित काव्यप्रकाश की हिन्दी व्याख्या] स्व. आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्तशिरोमणि, (1960), ज्ञानमण्ड़ल लिमिटेड़, वाराणसी।
3. श्रीविश्वनाथकविराजप्रणीतःसाहित्यदर्पणःसविमर्श–'शशिकला'–हिन्दीव्याख्योपेतः, डॉ. सत्यव्रतसिंह (2007), प्रकाशक चौखम्बा विद्याभवन (भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक) चौक (बैंक ऑफ बड़ोदा भवन के पीछे) पो. बा. नं. 1069, वाराणसी 221001

4. काव्यशास्त्र, डॉ. भगीरथ मिश्र (1984), प्रकाशक विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक, वाराणसी–1

5. संस्कृत साहित्य का इतिहास डॉ. कमल नारायण टंडन, (2005), प्रकाशक बी. के. तनेजा, क्लासिकल पब्लिसिंग कम्पनी,नई दिल्ली – 110015

6. संस्कृत वांग्मय का वृहद इतिहास (सप्तम खण्ड) पदम् भूषण आचार्य श्री बलदेव उपाध्याय – उ. प्र. संस्कृत संस्था,लखनऊ।

7. संस्कृत साहित्य परिचय डॉ.-राधा बल्लभ त्रिपाठी (1998) प्रतिभा प्रकाशन 29/5 शक्तिनगर, दिल्ली 110007

8. हिन्दी साहित्य का इतिहास (द्वितीय खण्ड) डॉ. राम प्रसाद मिश्र (2008) नमन प्रकाशन 4231/1, अंसारी रोड,दरियागंज,नई दिल्ली – 110002

9. हिन्दी साहित्य का इतिहास (सप्तम खण्ड) डॉ. राम प्रसाद मिश्र (2008) नमन प्रकाशन 4231/1,अंसारी रोड,दरियागंज,नई दिल्ली – 110002

शब्द कोश

1. पारिजात कोश, डॉ. ईश्वरचन्द्र शर्मा, परिचय पब्लिकेशन्स दिल्ली, 2004

2. संस्कृत हिन्दी कोश, वामन शिवराम आप्टे मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, दिल्ली 1966, 1969.